Issue - 1

Volume - 1 January - March, 2013

# Rajasthan Police Academy

## News Letter

### इस अंक में ...

- आरपीएस बैच 46 एवं आरक्षी बैच 59 का दीक्षान्त परेड
- नारी सुरक्षा से जुड़े अहम सवाल
- डी.एन.ए. प्रोफाईलिंग : अपराध अन्वेषण में महत्त्व
- राजस्थान पुलिस कमाण्डो को स्वर्णिम सफलता

## निदेशक की कलम से ...

राजस्थान पुलिस अकादमी में पदस्थापन के साथ ही मुझे पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रशिक्षण की नई जिम्मेदारी प्राप्त हुई है। अच्छे पुलिस प्रशिक्षण से ही सेवा भावी व दक्ष पुलिस अधिकारी पैदा किये जा सकते हैं। इसके लिए नवाचारों के साथ ही देश एवं विदेश में पुलिस अधिकारियों को दिये जाने वाले प्रशिक्षण, प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों, प्रशिक्षण विधियों, आधारभूत संसाधनों सभी का अध्ययन कर स्थानीय परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने का प्रयास किया जायेगा। भविष्य में इस चुनौती का सामना करने के लिए देश के अनुभवी पुलिस अधिकारियों से भी विमर्श कर सहयोग प्राप्त किया जायेगा।

विगत कुछ जन आन्दोलनों में पुलिस कार्यशैली को प्रमुख रूप से निशाना बनाया गया है। पुलिस कार्यशैली में सुधार के लिए एवं पुलिस कार्यशैली को व्यावहारिक बनाने के लिए इस विषय पर विशेषज्ञों से शोध परक सुझाव आमंत्रित किये जाने से इसमें अपेक्षित सुधार सम्भव हो पायेगा। राजस्थान पुलिस अकादमी द्वारा करवाये जाने वाले शोध कार्य में भी इस निमित्त प्रयास किये जायेंगे। आज आवश्यकता इस बात की है कि पुलिस की गिरती साख को न केवल संभाला जाये अपितु उसे जन अपेक्षाओं के अनुरूप भी बनाया जाये। पुलिस की साख में वृद्धि से जनता का सहयोग सहज ही प्राप्त होगा। हमें इस तथ्य को नहीं भूलना चाहिए कि पुलिस जनता के साथ ही प्रजातंत्र की भी सजग प्रहरी है।

अतः पुलिस की परम्परागत कार्यशैली में वांछित सुधार की शुरुआत प्रशिक्षण स्तर पर की जाकर उसे जन अपेक्षाओं के अनुरूप बनाने का प्रयास किया जायेगा। आज जनता, मीडिया एवं न्यायालय प्रत्येक पुलिसकर्मी को पूर्णतया दक्ष एवं श्रेष्ठ रूप में देखना चाहते हैं। इस स्थिति तक पहुँचने में हमें भले ही कुछ समय और लगे परन्तु हमें यह प्रयास करना चाहिए कि जनता ने अगर हमें अपनी सुरक्षा की जिम्मेदारी दी है, तो वह कम से कम हम पर विश्वास भी करे। पुलिस अगर जनता के लिए है तो जनमित्र क्यों नहीं ? पुलिस प्रशिक्षण को जनमित्र पुलिस प्रशिक्षण बनाना मेरी पहली प्राथमिकता होगी।

पाठकों से निवेदन है कि पुलिस प्रशिक्षण को बेहतर बनाने के लिए हमें निरन्तर अपने सुझाव प्रेषित करते रहें।

भगवान लाल सोनी
निदेशक

# आरपीएस बैच 46 एवं आरक्षी बैच 59 का दीक्षान्त परेड

राजस्थान पुलिस सेवा के बैच संख्या 46 एवं आरक्षी बैच संख्या 59 का दीक्षान्त परेड समारोह राजस्थान पुलिस अकादमी में दिनांक 22.03.2013 को माननीय श्री अशोक गहलोत मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में राजस्थान पुलिस अकादमी के सम्पूर्ण प्रांगण में शानदार सजावट कर भव्यता प्रदान की गई। दीक्षान्त परेड समारोह में विभाग के सेवारत एवं सेवानिवृत अधिकारियों के अतिरिक्त प्रशिक्षुओं के परिजनों ने बड़ी संख्या में शिरकत कर समारोह की शोभा बढ़ाई। माननीय मुख्यमंत्री महोदय के मंच पर आगमन पर परेड द्वारा अभिवादन के पश्चात् माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा परेड का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण समाप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय ध्वज व पुलिस कलर पार्टी का परेड ग्राउण्ड पर आगमन हुआ तत्पश्चात् प्रशिक्षणार्थियों को संविधान तथा कानून द्वारा स्थापित लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति पूर्णनिष्ठा एवं विश्वास का परिचय देने तथा एक लोकसेवक के रूप में नागरिकों के प्रति सद्व्यवहार एवं उनके जीवन व सम्पत्ति की सुरक्षा के प्रति निष्पक्ष एवं समर्पित भाव से कार्य करने की शपथ दिलवाई गई। पुलिस कलर पार्टी के परेड ग्राउण्ड से प्रस्थान के पश्चात् प्रशिक्षणार्थियों द्वारा भव्य परेड का प्रदर्शन किया गया। जब परेड मंच से गुजरी तो सभी उपस्थित जन ने करतल ध्वनि से नव प्रशिक्षुओं का उत्साहवर्द्धन किया।

परेड के मंच से गुजरने के पश्चात् प्रशिक्षण में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले अधिकारियों एवं जवानों को माननीय मुख्यमंत्री के कर कमलों से पारितोषिक वितरण किया गया। पारितोषिक प्राप्त करने वालों में राजस्थान पुलिस सेवा के प्रशिक्षु अधिकारियों में सुश्री स्वाति शर्मा को समस्त प्रशिक्षण में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए स्वार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। स्वाति शर्मा ने इण्डोर में प्रथम स्थान प्राप्त कर मैडल एवं प्रशंसा पत्र प्राप्त किया। श्री नानगराम मीणा को आउटडोर तथा फायरिंग में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर दोनों के लिए मैडल एवं प्रशंसा पत्र प्रदान किये गये। कानिस्टेबल रिक्रुट में सुश्री आशु पुत्री श्री होशियार सिंह जिला गंगानगर को ऑल राउण्ड प्रथम स्थान इण्डोर, लॉ, चिकित्सा न्यायशास्त्र एवं न्यायिक विज्ञान विषय में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर ट्रॉफी मय प्रशंसा पत्र प्रदान किये गये। इस बैच के श्री नारायण सिंह जिला जालौर को ऑल राउण्ड प्रथम स्थान प्राप्त करने, श्री बलदेव राम जिला जोधपुर शहर को ऑल राउण्ड द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर, श्री

कमलेश कुमार जिला जोधपुर को ऑल राउण्ड द्वितीय स्थान आउटडोर एवं पी.टी. में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर, श्री अशोक कुमार जिला जालौर को ड्रिल में प्रथम प्राप्त करने पर, श्री धर्मेन्द्र सिंह को फायरिंग में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर, श्री लादाराम जिला जोधपुर शहर को पी.टी. में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर एवं श्री रामनिवास जिला जोधपुर शहर को भी पी.टी. में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर ट्रॉफी मय प्रशंसा पत्र प्रदान किये गये। इस अवसर पर राजस्थान पुलिस अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके बैच संख्या 44 की आरपीएस प्रशिक्षु श्रीमती जया सिंह एवं बैच संख्या 45 के आरपीएस प्रशिक्षु श्री दुर्गसिंह राजपुरोहित को अपने–अपने बैच में स्वार्ड ऑफ ऑनर प्राप्त करने पर माननीय मुख्यमंत्री द्वारा पूर्व में घोषित गोल्ड मैडल भी जिला भरतपुर एवं झुन्झुनू के विशेष वाहकों को दिये गये ताकि उक्त मैडल किसी उचित कार्यक्रम के समय इन आरपीएस प्रशिक्षुओं को प्रदान किये जा सकें।

इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने सभी प्रशिक्षुओं को उनके शानदार परेड के लिए हार्दिक बधाई दी। उन्होंने पुलिस की प्रमुख चुनौतियों यथा संगठित अपराध गिरोह, साइबर अपराध, नक्सलवाद व आतंकवाद का उल्लेख करते हुए पुलिस के उच्च स्तर के प्रशिक्षण एवं आधुनिकीकरण को अत्यावश्यक बताया। उन्होंने कहा कि पुलिस को संवेदनशील सामाजिक सेवा प्रदान करने वाली संस्था के रूप में देखा जाता है। उन्होंने पुलिस में सामर्थ्य वृद्धि के लिए विशेष दस्ते जैसे – ए.टी.एस., एस.ओ.जी., साइबर सैल, कमाण्डो, ई.आर.टी. आदि के गठन का उल्लेख करते हुए पुलिस को सामाज के अनुरूप ढालने के लिए विभिन्न कार्यक्रम अर्थात् महिलाओं की अधिकाधिक पुलिस में भर्ती को प्रोत्साहन, किशोर न्याय, मानव तस्करी, गुमशुदा व्यक्तियों के लिए पृथक से प्रकोष्ठ के गठन का भी उल्लेख किया। उन्होंने समाज के कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशीलता, जैण्डर सेन्सेटाईजेशन जैसे विषयों का पुलिस में विशेष महत्त्व बताया। उन्होंने युवाओं में जिम्मेदार नागरिक के संस्कार डालने के लिए विद्यार्थी पुलिस कैडेट योजना को राजस्थान में लागू करने के बारे में बताया तथा कहा कि यह प्रोजेक्ट राजस्थान सरकार द्वारा राज्य की प्रत्येक पंचायत समिति में एक–एक उच्च माध्यमिक विद्यालय में लागू किया जायेगा। इस योजना में नवीं एवं दसवीं के छात्र पुलिस व पुलिस कार्यप्रणाली को नजदीक से समझेंगे। कानून व न्यायिक प्रक्रिया का ज्ञान अर्जित करेंगे तथा नियमित रूप से परेड करेंगे एवं पुलिस व अन्य विभागों के कार्यक्रमों में वॉलेन्टीयर के रूप में कार्य करेंगे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री महोदय ने पुलिस कल्याण से जुड़ी राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में भी बताया।

महानिदेशक पुलिस श्री हरीशचन्द्र मीना ने प्रशिक्षु अधिकारियों का राजस्थान पुलिस परिवार में शामिल होने पर स्वागत करते हुए उन्हें कड़े अनुशासन, मेहनत व लगन से कार्य करते हुए पुलिस विभाग में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने का आह्वान किया। इस अवसर पर राजस्थान पुलिस अकादमी के निदेशक श्री बी.एल. सोनी ने अकादमी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने बताया कि अकादमी प्रशिक्षण हेतु स्वस्थ व सकारात्मक वातावरण प्रदान कर कार्य कुशलता के साथ–साथ व्यक्तित्व के बहुआयामी विकास के माध्यम से पुलिस विभाग को जिम्मेदार एवं कुशल अधिकारी सौंपने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने आधारभूत प्रशिक्षण के साथ–साथ अकादमी में सेवारत अधिकारियों की व्यावसायिक कार्यक्षमता एवं अनुसंधान कौशल की अभिवृद्धि हेतु चलाये जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उल्लेख किया तथा समाज के अतिसंवेदनशील वर्गों के लिए चलाये जाने वाले क्षमता संवर्द्धन प्रशिक्षणों का भी उल्लेख किया। इस अवसर पर श्री आर. एस. ढ़िल्लों, अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस प्रशिक्षण द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

# गणतंत्र दिवस समारोह

राजस्थान पुलिस अकादमी में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 26 जनवरी 2013 को प्रातः 08:00 बजे अकादमी के स्टेडियम में गणतंत्र दिवस समारोह के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर अकादमी के निदेशक, श्री भूपेन्द्र सिंह द्वारा परेड की सलामी ली गई एवं राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। राजस्थान पुलिस अकादमी के सभी अधिकारी, कर्मचारी एवं प्रशिक्षणार्थी इस अवसर पर उपस्थित थे। इस अवसर पर अकादमी में खूबसूरत सजावट की गई तथा रंगोली सजाई गई। अकादमी के प्रशासनिक भवन, मनु सदन एवं हॉस्टल आदि में शानदार सजावट की गई। इस अवसर पर अकादमी के निदेशक ने अपने उद्बोधन में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अकादमी में और अधिक प्रतिबद्धता से काम करने का आह्वान किया तथा अकादमी को देश की श्रेष्ठ अकादमियों में से एक बताते हुए सभी की भूमिका के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने हर एक कर्मचारी को अकादमी के लिए महत्त्वपूर्ण बताया तथा सभी को साथ मिलकर टीम के रूप में आगे भी कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर कैप्टन विभूति देवड़ा एवं उनकी टीम द्वारा ऐरो मॉडलिंग का प्रदर्शन भी किया गया। अकादमी स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी भी समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर राजस्थान पुलिस अकादमी के सेन्ट्रल बैण्ड द्वारा भी शानदार प्रस्तुति दी गई। देशभक्ति के शानदार गीतों की भाव विभोर करने वाली प्रस्तुति पुलिस अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे श्री कुशाल सिंह एवं सुश्री अंतिम शर्मा एस.आई. (प्रोबेसनर) द्वारा दी गई।

अकादमी में इस अवसर पर अनेक कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। सर्वप्रथम सम्मानित होने वाले कर्मचारियों में अति उत्तम सेवा चिन्ह प्राप्तकर्ता थे। इस वर्ष सर्वश्री जगदीश सिंह एवं निहाल सिंह, हैड कानिस्टेबल तथा सर्वश्री बाबूलाल, अयूब खां, छोटूलाल, देवीसिंह, नेमीचन्द, हवासिंह एवं श्रीमती सुनीता शर्मा को अति उत्तम सेवा चिन्ह प्रदान किये गये। उत्तम सेवा चिन्ह प्राप्त करने वालों में महेन्द्र सिंह, प्रकाशचन्द, मोहन लाल, बृजोराम, पप्पूसिंह, ओमप्रकाश, दलवीर, सागरमल एवं श्रीमती सुमित्रा कानिस्टेबल थे। इन कर्मचारियों को इनकी उत्कृष्ट एवं बेदाग सेवा के लिए ये चिन्ह उप महानिरीक्षक पुलिस कार्मिक के आदेश के अनुशरण में प्रदान किये गये।

अकादमी में भी उत्कृष्ट कार्य करने के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्मानित किया गया, जिनमें सर्वश्री प्रभाती लाल संचित निरीक्षक, श्री विशनाराम एवं श्रीमती सुशीला पुलिस निरीक्षक, श्रीमती पूनम उप निरीक्षक, सर्वश्री बन्ने सिंह, निहाल सिंह, समदरमल एवं तंवर सिंह मुख्य आरक्षी सर्वश्री जगदीश सिंह, सुरेन्द्र सिंह, पहली राम, मोहन लाल, सीताराम, प्रेमपाल, गजेन्द्र सिंह, भंवर सिंह, सम्पतराम एवं बीरबल आरक्षी को उनके उत्कृष्ठ कार्य के लिए पाँच सौ रूपये मय प्रशंसा पत्र प्रदान किये गये। अकादमी में पदस्थापित डॉ. विकास नोटियाल व्याख्याता, श्री रामूराम कार्यालय सहायक, श्री रूड़ सिंह मुंशी, श्री अरूण सिद्धा कनिष्ठ लिपिक प्रशिक्षण शाखा, श्री रामस्वरूप एवं श्रीमती बादामी बाई, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, श्री गोपाल सिंह कुक, श्री नाहर मल बागवान एवं श्री यदुराज शर्मा कन्सलटेन्ट सेन्टर फोर सोशियल डिफेन्स को भी उनके उत्कृष्ठ कार्य के लिए प्रशंसा पत्र प्रदान किये गये।

समारोह के अन्त में अकादमी के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों में मिठाई वितरित की गई तथा अधिकारियों एवं सम्मानित होने वाले कर्मचारियों के लिए मनु सदन में अल्पाहार का आयोजन किया गया।

# बदलाव के पर्याय श्री भूपेन्द्र सिंह

राजस्थान पुलिस अकादमी के निदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह का स्थानांत्तरण प्रो वाईस चॉन्सलर के रूप में सरदार पटेल पुलिस विश्वविद्यालय में हुआ है। उनके स्थान पर श्री भगवान लाल सोनी को अकादमी के निदेशक पद पर लगाया गया है। श्री भूपेन्द्र सिंह राजस्थान पुलिस अकादमी में निदेशक के रूप में दिनांक 31–10–2007 से कार्यरत थे। उन्होंने अपने प्रयासों से राजस्थान पुलिस अकादमी को भारत के अग्रणी पुलिस अकादमियों की श्रेणी में स्थापित किया। स्वभाव से सौम्य श्री भूपेन्द्र सिंह निरन्तर अकादमी में सुधार के लिए प्रयासरत रहते थे। इस कार्य में उन्होने अकादमी में प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमता के अनुसार महत्ती जिम्मेदारी सौंपी तथा आवश्यकतानुसार मार्ग दर्शन एवं सहायता प्रदान कर बेहत्तरीन परिणाम हासिल किये।

श्री भूपेन्द्र सिंह के पदस्थापन से पूर्व अकादमी में पुलिस अधिकारियों के प्रशिक्षण एवं इनसर्विस कॉर्सेज आदि का कार्य ही करवाया जाता था। श्री भूपेन्द्र सिंह ने श्रीलंका के राष्ट्रपति की सुरक्षा में लगे 300 पुलिस अधिकारियों के आठ बैच को प्रशिक्षण प्रदान कर अकादमी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलवाई। उन्हीं के कार्यकाल में अमेरिका के अधिकारियों द्वारा सर्वेलेन्स पर 15 दिन का प्रशिक्षण राजस्थान पुलिस अकादमी में आयोजित किया गया, जिसमें देश के विभिन्न प्रान्तों एवं केन्द्रीय पुलिस संगठनो तथा दूसरे राज्यों के पुलिस अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया। उनके कार्यकाल में बीपीआर एण्ड डी तथा अन्य एजेंसियों द्वारा राजस्थान पुलिस अकादमी को अनेक प्रशिक्षणों हेतु चुना गया, जिससे राजस्थान पुलिस एवं अकादमी के अधिकारियों की क्षमता में वृद्धि हुई।

श्री भूपेन्द्र सिंह हमेशा नवाचारों के लिए चिन्तनशील रहते थे। परम्परागत साधनों एवं यथास्थिति बनाये रखने में उनका विश्वास नहीं था। वे हमेशा उत्कृष्टता की तरफ बढ़ना चाहते थे। कई बार उनके विचार असंभव से लगते थे। उनकी शैली में हमेशा अधीनस्थ की क्षमता की सही पहचान कर उसे उसकी क्षमता से अधिक लक्ष्य प्रदान करना था। यही कारण था कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूर्ण क्षमता और मनोयोग से उनके अकादमी विकास के लिए भागीरथ प्रयास में साथ लगा रहता था। उनकी प्रशासनिक क्षमता एवं नवाचार पूर्ण सोच के कारण ही उन्हें अकादमी को उत्कृष्टता प्रदान करने में चूड़ान्त सफलता प्राप्त हुई। राजस्थान पुलिस अकादमी में श्री भूपेन्द्र सिंह के कार्यकाल में आधारभूत सुविधाओं एवं प्रशिक्षण सहायक सामग्रियों के विकास में अभूतपूर्व प्रगति हुई। मनुसदन, जिमनेजियम हॉल, ऑडिटोरियम, अकादमी के सौन्दर्यकरण में उनके प्रयास स्पष्ट दिखाई देते हैं। पुलिसकर्मियों के कल्याण के लिए उन्होनें सेवा संकुल के माध्यम से अकादमी परिसर में रहने वाले परिवारों की विभिन्न समस्याओं का समाधान किया। अकादमी परिसर में स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय को नया स्थान एवं उत्कृष्ट भवन प्रदान करने का कार्य उन्हीं के प्रयासों से हो पाया। अकादमी परिसर में ही सामुदायिक केन्द्र की स्थापना से भविष्य में कई पुलिस परिवार लाभान्वित होंगे। अकादमी उनके कार्यकाल को हमेशा बदलाव के कार्यकाल के रूप में याद करती रहेगी। वे स्वप्न दृष्टा ही नहीं, युग दृष्टा भी थे।

श्री भूपेन्द्र सिंह के स्थान पर श्री भगवान लाल सोनी ने निदेशक का कार्यग्रहण किया है। इससे पूर्व श्री सोनी पुलिस आयुक्तालय जयपुर में प्रथम पुलिस आयुक्त के रूप में कार्यरत थे। श्री भगवान लाल सोनी ने पुलिस आयुक्त के रूप में लगभग साढ़े तीन वर्ष तक कार्य किया है। श्री भगवान लाल सोनी एवं श्री भूपेन्द्र सिंह दोनो ही पुलिस अधिकारी के रूप में विशिष्ट छवि रखते है। दोनों ने ही विभिन्न जिलों में पुलिस अधीक्षक के रूप में कार्य किया है तथा दोनों ही केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो में प्रतिनियुक्ति पर कार्य कर चुके हैं। दोनों ही स्वभाव से सौम्य, सकारात्मक सोच वाले तथा योग्य पुलिस अधिकारी के रूप में जाने जाते हैं।

श्री भूपेन्द्र सिंह के स्थानान्तरण पर उन्हें अकादमी के पुलिस अधिकारियों द्वारा भावभिनी विदाई दी गई, जिसमें अधिकारियों के परिवार के सदस्य भी शामिल हुये।

# फुटबाल में जोश पर अनुभव भारी

गणतंत्र दिवस पर पुलिस अकादमी स्टाफ एवं प्रशिक्षुओं के बीच फुटबाल मैच का आयोजन किया गया। प्रतिवर्ष प्रशिक्षु एवं प्रशिक्षक इस अवसर पर आमने–सामने होते हैं। पूर्व में क्रिकेट मैच खेला जाता था। गत स्वाधीनता दिवस पर फुटबाल मैच का आयोजन किया गया एवं गणतंत्र दिवस पर भी पुनः फुटबाल मैच में एक बार फिर अनुभव और जोश आमने–सामने थे। कहा जाता है कि जीवन में जंग जीतने के लिए अनुभव और जोश दोनों की आवश्यकता होती है परन्तु जब दोनों आमने–सामने हों तो कौन प्रबल रह पायेगा, कल्पना करना मुश्किल है। गत वर्ष स्वाधीनता दिवस पर हुए फुटबाल मैच में अकादमी स्टाफ द्वारा शुरू में दो गोल से बढ़त हासिल कर ली गई थी। प्रशिक्षुओं के निरन्तर तीव्र हमलों के पश्चात् उनकी टीम मात्र एक ही गोल करने में सफल हो पायी। इस प्रकार अनुभव जोश पर भारी रहा। इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर अकादमी स्टाफ की टीम के सदस्यों की उम्र को देखते हुए उन्हें सावधानी से खेलने की सलाह दी गई। अकादमी की टीम का नेतृत्व डॉ. रामेश्वर सिंह सहायक निदेशक इण्डोर द्वारा किया गया। इस टीम में श्री ज्ञानचन्द्र यादव, सहायक निदेशक आउटडोर सहित श्री राजेन्द्र चौधरी एवं श्री राजेश ढ़ाका पुलिस निरीक्षक, श्री जीतेन्द्र सिंह कम्पनी कमाण्डर, श्री धीरज वर्मा उप निरीक्षक, श्री रोहिताश सिंह हैड कानिस्टेबल आदि थे। दोनों टीमें लगभग समान आक्रमण कर रही थी। दर्शकों में भारी उत्साह था एवं अकादमी स्टाफ अपने खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाने के लिए एवं प्रशिक्षु अपनी टीम के उत्साहवर्द्धन के लिए कोशिश कर रहे थे। तमाम दर्शक पूरी तरह मैच के रोमांच से सरोबार थे। मैच में पहला गोल श्री रजवन्त सिंह हैड कानिसटेबल द्वारा किया गया जिससे अकादमी स्टाफ टीम को एक गोल की बढ़त बनाने में कामयाबी प्राप्त हुई। इसी बीच दूसरा गोल भी डॉ. रामेश्वर सिंह द्वारा अकादमी टीम ने ही किया। स्टेडियम तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। अकादमी स्टाफ जहाँ गोल की खुशी मना रहा था वहीं प्रशिक्षुओं के चेहरे पर चिन्ता की लकीरें और गुस्सा साफ दिखाई दे रहा था। प्रशिक्षुओं द्वारा अनेक आक्रमण किये गये परन्तु राजेन्द्र चौधरी एवं रोहिताश हैड कानिस्टेबल की दीवार को भेद पाने में विफल रहे। मैच 2–0 गोल से निर्णित रहा। मैच के उपरान्त सहायक निदेशक प्रशासन द्वारा सभी को शानदार खेल के लिए बधाई दी गई। विजेता टीम को पुरस्कार स्वरूप ट्रेकसूट एवं उप विजेता टीम को टी शर्टस देने की घोषणा की गई।

---

### श्री अशोक शर्मा को भावभीनी विदाई

श्री अशोक शर्मा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, राजस्थान पुलिस अकादमी से दिनांक 31–3–2013 को सेवानिवृत्त हुए जिन्हें अकादमी द्वारा भावभीनी विदाई दी गई। इस अवसर पर श्री शर्मा द्वारा अपने सेवाकाल के रोचक वृत्तांत भी सुनाये गये। अकादमी परिवार उनके सुखद सेवा निवृत्त जीवन की कामना करता है।

# नारी सुरक्षा से जुड़े अहम सवाल

**पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने।**
**रक्षन्ति स्थाविराः पुत्राः, न स्त्री स्वतन्त्र्यमहर्ति।।**

नारी सुरक्षा के नाम पर स्त्रियों पर शुरू से ही कुछ बन्दिशें रही हैं। सुरक्षा के नाम पर आज भी उनसे विशेष प्रकार के आचरण की अपेक्षा की जाती है। कट्टरपंथी संगठन एवं समाज के ठेकेदार चाहें किसी भी धर्म के हों, महिलाओं से मर्यादा के नाम पर आक्रामक व्यवहार करने से भी संकोच नहीं करते है। महिलाओं के प्रति हमारे देश में लोगों का भिन्न–भिन्न नजरिया रहा है। जहाँ एक तरफ 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः', की बात कही गई है, वहीं 'स्त्री शूद्रो नधीयताम्' की बात कहकर समस्त स्त्री जाति एवं समाज के कमजोर वर्गों का अपमान किया गया है। पुरूष प्रधान समाज में नारी को दबाने की चेष्ठा वर्षों से हुई है। पुरूष की प्रधानता एवं नारी की अधीनता पर हम वर्षों से बहस करते आये हैं। आज भी समाज में बहुसंख्यक लोग नारी की अधीनता के पक्ष में हैं, चाहे यह बात हमारे मूल अधिकारों एवं प्रजातांत्रिक व्यवस्था के प्रतिकूल हो। नारी की अधीनता उसके आर्थिक रूप से स्वावलम्बी होने से ध्वस्त हो सकती है परन्तु उसके विरुद्ध होने वाले यौन अपराधों के सम्बन्ध में हमें गंभीरता से मंथन करना होगा। यौन अपराधों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। बलात्कार एवं अन्य यौन अपराधों में वृद्धि न केवल चिन्ता का विषय है अपितु यह एक राष्ट्रीय शर्म की बात भी है।

महिला सुरक्षा को लेकर गत दिनों दिल्ली और देश के अन्य भागों में जनता द्वारा उग्र अभिव्यक्ति दी गई। महिला सुरक्षा से सम्बन्धित कानून की समीक्षा की गई। कानून में बहुत से व्यक्तियों द्वारा कठोर दण्ड एवं बलात्कार के मामलों में मृत्युदण्ड की आवश्यकता बताई गई। महिला सुरक्षा के सम्बन्ध में पर्याप्त सुरक्षा उपलब्ध नहीं करवाने के लिए सरकार को कोसा गया। पुलिस तंत्र पर महिला सुरक्षा को लेकर असंवेदनशील होने की तोहमत लगाई गई। अनेक संगठनों ने उक्त प्रदर्शन में भाग लिया तथा समूचे तंत्र को महिला सुरक्षा के लिए अनुपयोगी बताया गया। महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों में गत वर्षों में वृद्धि हुई है, यह तथ्य एनसीआरबी के आंकड़ों से स्पष्ट है। महिला सुरक्षा में पुलिस की विफलता कितनी सच है, इस मुद्दे पर सम्बन्धित पक्षों को सही जानकारी होनी चाहिए।

कानून व्यवस्था राज्य का विषय है और पुलिस की प्रथम जिम्मेदारी है। पुलिस कानून व्यवस्था स्थापित करने के अतिरिक्त अपराध अनुसंधान का कार्य भी करती है ताकि दोषियों को सजा दिलवाई जा सके। इस विषय में सर्वप्रथम जनसंख्या के अनुपात में पुलिस नफरी का उल्लेख अतिशय जरुरी है जो हमारे देश में प्रति एक लाख व्यक्तियों पर बहुत कम पुलिसकर्मी हैं। पुलिस को नागरिक सुरक्षा दिये जाने की जिम्मेदारी से बचाया नहीं जा सकता, परन्तु तथ्यों के व्यावहारिक पक्ष पर विचार किये बिना पुलिस पर तोहमत गढ़ देना एक पक्षीय होगा जो नैसर्गिक न्याय के सिद्धान्त के अनुरुप नहीं होगा। व्यावहारिक पक्ष यह भी है कि एक व्यक्ति की कार्यक्षमता चौबीस घण्टे कार्य करने की नहीं होती है। अतः प्रति एक लाख पर उपलब्ध पुलिसकर्मियों को आठ घण्टे कार्य पर मानते हुए केवल महिला सुरक्षा पर ही लगा दिया जावे तो भी बहुत कम महिलाओं की ही सुरक्षा हो पायेगी। यह बात सिर्फ हमारे देश के संदर्भ में ही सच नहीं है अपितु सम्पूर्ण विश्व के देशों के सम्बन्ध में सही है।

महिलाओं और बच्चों पर होने वाले अपराधों की विशेषता यह होती है कि अपराधी अवसर की तलाश में रहता है। अर्थात् महिलाओं के विरुद्ध होने वाली यौन हिंसाओं में अपराधी लोगों की नजर से बचकर तथा निर्जन या उस स्थान पर अपराध करता है, जहाँ उसे आसानी से पकड़ा नहीं जा सके। महिलाओं को झांसा देकर उनकी सहमति से या अकेले पाकर अपराध को अंजाम देता है। अतः अपराध करने वाले व्यक्ति के आस–पास पुलिस कहीं नहीं होती है। गत दिनों दिल्ली में हुए प्रदर्शन में पुलिस को इस प्रकार कोसा गया मानो अपराध पुलिस की उपस्थिति में ही नहीं पुलिस की सहमति से हुआ हो। उक्त अपराध में सच्चाई यह थी कि अपराध की शिकार युवती और उसका साथी युवक अपराधियों से गच्चा खा गये थे। उक्त घटना के पश्चात् बलात्कार की अनेक घटनाऐं समाचार पत्रों में प्रमुखता से खबर बन रही हैं।

देश की जनता की इस सम्बन्ध में यह मांग हो सकती है कि पुलिस को जनता की सुरक्षा के लिए लगाया गया है तो वह अपराधियों को तुरन्त गिरफ्तार क्यों नहीं करती ? शहरों में

फ्लोटिंग पोपुलेशन में बढ़ोतरी एवं आवागमन के साधनों में वृद्धि ने यह कार्य काफी मुश्किल बना दिया है। जन आन्दोलन के द्वारा पुलिस पर दबाव बनाकर उसे अपराधी को गिरफ्तार करने की जिम्मेदारी से हटाकर कानून व्यवस्था सम्भालने की जिम्मेदारी में डाल दिया जाता है, जिसे समझने की आवश्यकता है।

उपरोक्त बातों को कहने का आशय यह नहीं है कि महिला सुरक्षा पुलिस की जिम्मेदारी नहीं है। महिला ही नहीं प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा की जिम्मेदारी पुलिस की है। इस सम्बन्ध में इस बात का उल्लेख भी विवक्षित है कि महिला एवं बच्चों की सुरक्षा निश्चित ही एक दुरूह कार्य है। कौन व्यक्ति, किस स्थान पर, किस समय, किस व्यक्ति को अपना निशाना बना रहा है, इसकी पूर्व जानकारी लगभग असंभव होती है क्योंकि अपराध करने वाले व्यक्तियों में 98 प्रतिशत महिलाओं के रिश्तेदार एवं परिचित होते है। पुलिसकर्मी को अगर अपराध पूर्व जानकारी मिल भी जाये तो उसे हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं होता है। पुलिस में बीट प्रणाली है जहां एक मौहल्ले से लेकर कुछ गांवों तक एक सिपाही की तैनातगी की जाती है। उक्त बीट का सिपाही भी अपनी बीट में निगरानी के अतिरिक्त पुलिस थाने के अनेक कार्य करता है, जिसमें कानून व्यवस्था, वी.आई.पी. ड्यूटी, सम्मन वारण्ट की तामिल व अन्य कार्य शामिल हैं। उसे अपने स्वयं के व्यक्तिगत कार्यों एवं तैयार होने के लिए भी समय की आवश्यकता होती है।

इन अपराधों में कुछ सावधानियों से नियंत्रण सम्भव है। कॉर्पोरेट जगत में लड़कियों एवं लड़कों के एक साथ काम करने से जहाँ एक तरफ युवकों में महिलाओं के प्रति सहज रहने की प्रवृति बढ़ी है वहीं कुछ व्यक्तियों द्वारा नजदीकियों का फायदा उठाने का प्रयास भी किया जाता है। महिलाओं को इस प्रकार के तत्वों से सावधान रहना चाहिए। माता–पिता भी अपने बच्चों से संवाद करें। बच्चे के व्यवहार में कोई परिवर्तन देखते हैं तो उसे गंभीरता से लेकर उसकी तह तक जाने का उन्हें प्रयास करना चाहिए। अभिभावकों के जागरूक होने से ही यौन अपराधों में कमी सम्भव है। अनावश्यक रूप से घर आने वाले युवकों से घर की युवतियों को अलग रखने का प्रयास किया जाना चाहिए। इस मामले में चाहे कोई कितना भी भला बने, विश्वास में ही विश्वासघात की सम्भावना रहती है।

महिलाओं के विरुद्ध होने वाले यौन अपराधों में और गत दिनों अखबार की सुर्खियां बने समाचारों के अध्ययन से एक बात स्पष्ट हो चुकी है कि अधिकांश अपराधी कम पढ़े लिखे, कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि से एवं सांस्कृतिक और नैतिक रूप से बिल्कुल पिछड़े एवं कमजोर व्यक्ति थे। इस प्रकार के व्यक्ति अनेक प्रकार के कामों से जुड़े हुए हैं, जहाँ उन्हें अपने शिकार तक पहुँचने का आसानी से अवसर प्राप्त हो जाता है। पुलिस इस प्रकार के व्यक्तियों का डेटा तैयार कर उन्हें समझाईश, निगरानी एवं जागरूकता अभियान के माध्यम से अपराधों में संलिप्त होने से कुछ हद तक रोक सकती है, परन्तु अपराधों पर पूर्ण नियंत्रण लगभग असंभव है। महिलाओं को यौन अपराधों से बचाने के लिए परिवार के व्यक्तियों का जागरूक होना सबसे ज्यादा जरुरी है। अपने आस–पास या रिश्तेदारी में जो लोग महिलाओं और बच्चों में अधिक रूचि लेते हैं तथा उनसे अकेले मिलने का प्रयास करते हैं, उन पर विशेष निगरानी रखी जानी चाहिए। पुराने समय में संयुक्त परिवार होने के कारण निगरानी कार्य कुछ हद तक आसान था। एकाकी परिवारों में बच्चों एवं महिलाओं की निगरानी नहीं हो पाने के कारण भी उन पर अपराधों की संख्या में वृद्धि हुई है।

महिलाओं एवं बच्चों पर होने वाले अपराधों में उपलब्ध कानून पर्याप्त हैं परन्तु अपराधों में सजा का प्रतिशत कम होने के कारण अपराधियों में कानून का भय नहीं है। कम सजाओं के भी कारण हैं, जिसमें हमारे कानून में संदेह का लाभ दोषी को मिलना एवं संदेह से परे अपराध को साबित करना अभियोजन की जिम्मेदारी होना प्रमुख हैं। महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराध अवसर प्राप्त होने पर किये जाते हैं जिसमें सामान्यतया प्रत्यक्ष साक्ष्य प्राप्त होने की संभावना नगण्य होती है। अधिकांश बलात्कार के मामले परिस्थितिजनक साक्ष्य पर अवलम्बित होते हैं। न्यायालय में परिस्थितिजनक साक्ष्य के मामलों में सजा करवाना काफी मुश्किल होती हैं क्योंकि आरोपी द्वारा महंगें अधिवक्ताओं की सेवाओं के अतिरिक्त गवाहों को डराना, बदलवाना, विलम्ब से सम्बन्धित पक्षों एवं गवाहों की रूचि खत्म होना विचारण में सजा दिलाने की सम्भावना को कम करते हैं।

महिलाओं की सुरक्षा के लिए सबसे ज्यादा जरुरत हमारे दृष्टिकोण को बदलने की है। इस दृष्टिकोण में बदलाव शिक्षा एवं जागरुकता पैदा करने से सम्भव होगा। समस्त बुराईयों की जड़ पुलिस को मानना भी दूषित दृष्टिकोण है एवं इसमें भी बदलाव की आवश्यकता है।

**जगदीश पूनियाँ,** आरपीएस

## डी.एन.ए. प्रोफाईलिंग : अपराध अन्वेषण में महत्व

अपराधियों का पता लगाने तथा किसी व्यक्ति की पहचान को स्थापित करने के प्रयोजन से विकसित नवीनतम तकनीक डी0एन0ए0 टाइपिंग या डी0एन0ए0 प्रोफाइलिंग या डी0एन0ए0 फिंगरप्रिंटिंग (DNA Typing or DNA Profiling or DNA Fingerprinting) है जिसके आविष्कार (1985) का श्रेय डॉ0 सर एलेक जॉन जेफ्रीज (Sir Alec John Jeffreys) को जाता है।

**डी0एन0ए0 की रासायनिक संरचना –**

मानव शरीर में असंख्य कोशिकाएँ पाई जाती है और प्रत्येक कोशिका में एक न्यूक्लियस होता है जिसमें डी0एन0ए0 पाया जाता है। न्यूक्लियस के अलावा प्रत्येक कोशिका के माईटोकॉण्ड्रिया में भी डी0एन0ए0 पाया जाता है। सन् 1962 में नोबल पुरस्कार विजेता डॉ0 जेम्स डी वाट्सन तथा फ्रांसिस एच. सी. क्रिक ने सन् 1953 में डी0एन0ए0 की द्विकुण्डलित (Double Helix) संरचना की खोज की।

डी0एन0ए0 का पूरा रूप है – डी–ऑक्सी राईबो न्यूक्लिक एसिड (Deoxyribonucleic acid)। डी0एन0ए0 चार प्रकार के नाइट्रोजनी क्षारों से बना होता है – थाइमिन (Thymine), एडिनीन (Adenine), ग्युएनीन (Guanine), साइटोसीन (Cytosine)। प्रत्येक व्यक्ति में इन चार नाइट्रोजनी क्षारों का अनुक्रम अन्य व्यक्तियों से भिन्न होता है लेकिन प्रत्येक व्यक्ति की सारी कोशिकाओं में इनका अनुक्रम एक ही होता है जिसके आधार पर एक व्यक्ति विशेष की अन्य व्यक्तियों से पृथक पहचान स्थापित की जा सकती है।

**डी0एन0ए0 प्रोफाइलिंग की तकनीक –**

डी0एन0ए0 में मौजूद चार प्रकार के नाइट्रोजनी क्षारों यथा – थाइमिन (Thymine), एडिनीन (Adenine), ग्युएनीन (Guanine), साइटोसीन (Cytosine) के अनुक्रम के आधार पर किसी व्यक्ति को पहचानने की विधि को डी0एन0ए0 फिंगर प्रिंटिंग या डी0एन0ए0 प्रोफाईलिंग कहा जाता है। डी0एन0ए0 परीक्षण किसी व्यक्ति के जीनोम में पॉलीमॉर्फिक लोकस की श्रृंखला में विशिष्टि एलील की उपस्थिति (Presence of specific allele in a series of polymorphic locus in genome) पर आधारित होता है जिसका आंकलन रेस्ट्रिक्टेड फ्रेग्मेंट लेंथ पोलीमॉर्फिज्म (Restricted Fragment Length Polymorphism - RFLP) या पोलीमरिक चैन रिएक्सन (Polymeric Chain Reaction) तकनीक द्वारा वेरीएबल नम्बर ऑफ टेन्डम रिपीट (Variable Number of Tandem Repeat) से किया जाता है। आर.एफ.एल.पी. में विश्लेषण के दो तरीके होते है – मल्टी लोकस पोलीमोर्फिज्म (Multi Locus Polymorphism - MLP) तथा सिंगल लोकस पोलीमोर्फिज्म (Single Locus Polymorphism - SLP)। पी.सी.आर. में भी विश्लेषण के दो तरीके होते है – शॉर्ट टेन्डम रिपीट्स (Short Tendem Repeats - STR) तथा मिनी–सेटेलाईट वेरीएंट रिपीट (Mini-satellite Varient Repeat - MVR)।

**अपराध अन्वेषण में डी0एन0ए0 प्रोफाईलिंग का महत्व –**

- अपराधियों की पहचान (Identification of Criminals)–जिन अपराधों में शारीरिक द्रव्यों का आदान–प्रदान होता है, उनमें अपराधी, पीड़ित, अपराध में प्रयुक्त हथियार व वाहन, अपराधस्थल व मार्ग इत्यादि का पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करना संभव है। किसी अपराधस्थल पर मिले गिलास, प्याले, सिगरेट के टुकड़े इत्यादि पर मौजूद थूक व लार के आधार पर अपराधी व्यक्ति की पहचान को स्थापित किया जा सकता है।
- रक्त संबंध, पितृत्व व मातृत्व का निर्धारण (Kinship, Paternity & Meternity Analysis) – पितृत्व व मातृत्व के संबंध में उत्पन्न विवाद के मामलों में पितृत्व व मातृत्व को स्थापित किया जाना संभव है। इसी प्रकार से रक्त के रिश्ते के दावों की पुष्टि की जा सकती है।
- ट्विन या जाइगोसिटी टेस्टिंग (Twin / Zygosity

Testing) – जब जुड़वा बच्चों के बारे में अस्पष्ट हो कि वे समानरूपी है या असमानरूपी तो जाइगोसिटी टेस्टिंग द्वारा वस्तुस्थिति का पता लगाना संभव है।

- लिंग की पहचान (Sex Identification) – 'वाई' क्रोमोसोमल टेस्टिंग द्वारा लिंग की पहचान स्थापित की जा सकती है।
- क्षत–विक्षत शवों की पहचान – शवों के टुकड़ों के आधार पर व्यक्तियों की पहचान को स्थापित किया जा सकता है।

**मानव शरीर से डी0एन0ए0 के नमूनों के स्रोत –**

डी0एन0ए0 मानव शरीर की सभी कोशिकाओं में पाया जाता है जिसे अनेक शारीरिक द्रव्यों से निष्कर्षित किया जा सकता है। मानव शरीर से डी0एन0ए0 के निम्न स्रोत है –

- रक्त (Blood)
- वीर्य (Seman)
- लार (Saliva)
- बलगम (Mucus)
- मल में उपकला कोशिकाएँ (Epithelial Cells in Feces)
- मूत्र में उपकला कोशिकाएँ (Epithelial Cells in Urine)
- मृत त्वचा कोशिकाएँ (Dead Skin Cells)
- जड़ सहित बाल (Hair Root)
- अस्थि में अस्थि मज्जा (Bone-marrow)
- दाँत की कैनाल से पल्प (Pulp)
- शरीर के ऊतक (Tissues)
- नवजात का भ्रूण (Embryo)
- शव से लिया गया रक्त (Blood from Dead Body)

क्षत–विक्षत शव (Mutilated Body), सड़ी–गली लाश (Decomposed and Putrefied Body), नर कंकाल से डी.एन.ए सैम्पल हेतु सर्वोत्कृष्ट स्रोत अस्थि–मज्जा (Bone Marrow) होता है और इस दृष्टि से फीमर (Femur) बोन को लिया जाना बेहतर होता है। इसके अलावा दाँतों की कैनाल से पल्प में भी डी0एन0ए0 मिल सकता है।

वस्तुतः डी0एन0ए0 फिंगरप्रिंटिंग में न्यूक्लियर डी0एन0ए0 ही आता है। अगर बाल जड़ रहित अवस्था में मिलता है तो न्यूक्लियर डी0एन0ए0 परीक्षण (nDNA Testing) संभव नहीं हो पाता है और ऐसी दशा में माईटोकोण्ड्रियल डी0एन0ए0 परीक्षण (mtDNA Testing) ही संभव हो पाता है जिससे मातृत्व (Meternity) का निर्धारण तो संभव हो पाता है लेकिन पितृत्व (Peternity) का निर्धारण संभव नहीं है।

**डी0एन0ए0 प्रोफाईलिंग तथा समानरूपी जुड़वा संतान (Identical Twins)**

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि प्रत्येक व्यक्ति के डी0एन0ए0 की संरचना अन्य व्यक्ति से भिन्न होती है जो सामन्यतः जुड़वा संतानों पर भी लागू होता है, लेकिन जुड़वा संतानों के दुर्लभतम मामलों में दोनों की डी0एन0ए0 प्रोफाईलिंग में पारस्परिक समानता भी पायी जा सकती है, यदि दोनों जुड़वा समानरूपी हों। जब पिता के दो शुक्राणु तथा माता के दो अण्डाणु से पृथक–पृथक निषेचन के बाद जुड़वा संतानें उत्पन्न होती है तो इन्हें असमानरूपी संतान या नॉन–आईडेंटिकल चिल्ड्रन कहा जाता है और इनके डी0एन0ए0 की संरचना भिन्न ही होगी, लेकिन पिता के एक शुक्राणु व माता के एक अण्डाणु के निषेचन के बाद निर्मित जायगोट (Zygote) कोशिका के द्विभाजन से दो जुड़वा संतानें उत्पन्न होती है तो इन्हें समानरूपी संतान या आईडेंटिकल चिल्ड्रन कहा जाता है और इनके डी0एन0ए0 की संरचना भिन्न नहीं होती। इस प्रयोजन से ट्विन या जाइगोसिटी परीक्षण (Twin or ZygosityTesting) किया जाता है ताकि यह पता लगाया जा सके कि दोनों जुड़वा संतानें समानरूपी है अथवा असमानरूपी।

**राम चन्द्र**
सीनियर रिसर्च फैलो
ईमेलः ramchandrajnvu@gmail.com
**चन्द्र प्रकाश**
पुलिस निरीक्षक
ईमेलः inspector.cp@gmail.com

# राजस्थान पुलिस कमाण्डो को स्वर्णिम सफलता

राजस्थान पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र जोधपुर में अखिल भारतीय पुलिस कमाण्डो प्रतियोगिता का शुभारंभ राजस्थान की राज्यपाल मार्गेट अल्वा के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उन्होंने देश में उग्रवाद, नक्सलवाद और सांप्रदायिकता जैसे खतरों से निपटने का भार पुलिस एवं केन्द्रीय पुलिस संगठनों के कंधों पर बताया तथा देश की इन प्रमुख चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रत्येक कमाण्डो के त्याग का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि पुलिस का जीवन सिर्फ चुनौतियों भरा होता है तथा उन्हें हर परिस्थिति के लिए हर वक्त तैयार रहना पड़ता है। प्रतियोगिता के उद्घाटन के दौरान राजस्थान पुलिस के कमाण्डो ने हैरतअंगेज स्टंट से सभी दर्शकों को रोमांचित कर दिया।

अखिल भारतीय स्तर पर पुलिस एवं केन्द्रीय पुलिस संगठनों की कई प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है जिसमें सभी टीमें अपना दमखम दिखाती है। इन प्रतियोगिताओं से पुलिस एवं केन्द्रीय पुलिस संगठन एक दूसरे के साथ अपना अनुभव साझा करते हैं। इन प्रतियोगिताओं से प्रत्येक बल में उत्कृष्टता प्राप्त करने का जज्बा पैदा होता है। कमाण्डो प्रतियोगिता से भी सभी संगठनों को एक दूसरे के नवाचारों से परिचित होने का अवसर प्राप्त होता है। आतंकवादी एवं नक्सलवादी किस प्रकार अपनी विध्वंसात्मक गतिविधियों को अंजाम देते है तथा उनको कांउटर करने का क्या बेहतर तरीका एवं टेक्टिक्स हो सकती है, की जानकारी इस प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागी टीमों को मिली। आंतकवाद एवं नक्सलवाद से लड़ने की नवीनतम तकनीक को साझा करना समय की जरूरत है। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने शारीरिक एवं मानसिक दक्षता के साथ ही संयम, धैर्य तथा विवेक के संतुलित एवं समन्वित अनुप्रयोग करना भी सिखा।

इस प्रतियोगिता में राजस्थान पुलिस के कमाण्डो ने दूसरी बार अखिल भारतीय पुलिस कमाण्डो प्रतियोगिता में बाजी मार कर स्वयं को सर्वश्रेष्ठ साबित किया। राजस्थान पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र जोधपुर के सुल्तान सिंह स्टेडियम में तृतीय अखिल भारतीय पुलिस कमाण्डो प्रतियोगिता के समापन समारोह में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने विजेता टीमों को पुरस्कार प्रदान किये। इस प्रतियोगिता में राजस्थान पुलिस ने प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल एवं सीमा सुरक्षा बल क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। राजस्थान पुलिस कमाण्डो टीम ने फायरिंग में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया, वही महाराष्ट्र पुलिस के कमाण्डो ने चीताह ऑफ द टूर्नामेंट का पुरस्कार प्राप्त किया।

राजस्थान पुलिस की ओर से विजेता ट्रॉफी को टीम लीडर श्री रतनसिंह कम्पनी कमाण्डर तथा टीम मैनेजर श्री रतनलाल पुलिस उपाधीक्षक ने प्राप्त की। इससे पूर्व प्रथम अखिल भारतीय पुलिस कमाण्डो प्रतियोगिता में कम्पनी कमाण्डर रतनसिंह के नेतृत्व में ही प्रथम स्थान प्राप्त किया था। द्वितीय अखिल भारतीय पुलिस कमाण्डो प्रतियोगिता में राजस्थान पुलिस की कमाण्डो टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया था, जिसमें रतनसिंह ने राजस्थान पुलिस कमाण्डो टीम का

प्रतिनिधित्व किया था। मुख्य अतिथि ने राजस्थान पुलिस की कमाण्डो टीम के लिए 5 लाख रूपये के पुरस्कार की घोषणा की। डी.जी.पी. श्री हरीश चन्द्र मीना के आग्रह पर मुख्यमंत्री महोदय ने तृतीय अखिल भारतीय पुलिस कमाण्डो प्रतियोगिता के समापन की घोषणा की। मुख्य अतिथि राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत तथा राजस्थान पुलिस के महानिदेशक श्री हरीश चन्द्र मीना ने विजेता टीम को बधाई दी।

प्रतियोगिता के दौरान ब्रीफिंग, फायरिंग, दौड़, बाधाएँ तथा होस्टेज रेस्क्यू इत्यादि इवेंट्स में टीम के प्रदर्शन के आधार पर विजेता टीमों की घोषणा की गई। राजस्थान ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए फायरिंग में 110 में से 106 अंक हासिल किए। राजस्थान पुलिस के फायरिंग में बेहतर प्रदर्शन से मिली बढ़त का जीत में महत्वपूर्ण योगदान रहा। राजस्थान पुलिस की कमाण्डो टीम को सेवानिवृत मेजर जनरल श्री दलबीर सिंह के नेतृत्व में प्रशिक्षक दल ने प्रशिक्षण प्रदान किया जिसके फलस्वरूप राजस्थान ने एक बार फिर सर्वश्रेष्ठ साबित कर दिखाया। द्वितीय स्थान पर रही केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कमाण्डो टीम ने भी राजस्थान पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र जोधपुर में सेवानिवृत मेजर जनरल श्री दलबीर सिंह के निर्देशन में कमाण्डो प्रशिक्षण प्राप्त किया था। राजस्थान पुलिस की कमाण्डो टीम के फायरिंग कोच सेवानिवृत सूबेदार मेजर श्री रमेश सिंह तथा फायरिंग एसिस्टेंट राजस्थान पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र जोधपुर में पदस्थापित कानिस्टेबल श्री सुरेश कुमार थे। इसके अलावा टीम के प्रशिक्षण में पुलिस ट्रेनिंग स्कूल जोधपुर में पदस्थापित कानिस्टेबल गंगासिंह का भी अहम् योगदान रहा।

इस अवसर पर महानिदेशक पुलिस श्री हरीशचन्द्र मीना, आई.बी. के स्पेशल डायरेक्टर श्री राजीव कपूर, पुलिस साईंस यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री एम.एल. कुमावत, अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस आर्मड बटालियन श्री मोहन लाल लाठर, अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस प्रशिक्षण श्री आर.एस. ढिल्लों, अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस मुख्यालय श्री जसवंत सम्पतराम, अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस श्री भूपेन्द्र सिंह आयोजन सचिव श्री सुनिल दत्त, पुलिस कमिश्नर श्री भूपेन्द्र कुमार दक, महानिरीक्षक पुलिस जोधपुर श्री डी.सी. जैन, सीमा सुरक्षा बल के महानिरीक्षक श्री पी.सी. मीणा के अलावा कई पुलिस व प्रशासनिक पदाधिकारी तथा गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इसके अलावा जोधपुर की जिला प्रमुख श्रीमती दुर्गा देवी, पाली के सांसद श्री बद्रीराम जाखड़, जेडीए चैयरमेन श्री राजेन्द्र सोलंकी, महापौर श्री रामेश्वर दाधीच इत्यादि भी मौजूद थे। धन्यवाद ज्ञापन आयोजन सचिव श्री सुनील दत ने प्रस्तुत किया। समापन अवसर पर दर्शकों को मराठी लोकनृत्य लेजिम की झलकियॉ देखने को मिली। लेजिम नृत्य में राजस्थान पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र जोधपुर तथा पुलिस ट्रेनिंग स्कूल जोधपुर की महिला रिक्रूट कानिस्टेबल ने अपनी बेहतर प्रस्तुति के द्वारा सभी दर्शकों को आश्चर्यचकित कर दिया। लेजिम प्रशिक्षण कम्पनी कमाण्डर श्री जोगेन्द्र सिंह, हैड कानिस्टेबल श्री करण सिंह, कानिस्टेबल श्रीमती चम्पा व संतोष ने दिया। पुरुष व महिला पुलिस कर्मियों ने संयुक्त रूप से मार्शल आर्ट व कराटे का प्रदर्शन करते हुए दर्शकों को आर्श्चयचकित कर दिया। इसमें इमरजेंसी रेस्पोंस टीम के कमाण्डो तथा हाडी रानी बटालियन की महिला कानिस्टेबल ने भाग लिया। टीम को प्रशिक्षण सेवानिवृत सूबेदार मेजर श्री जब्बर सिंह तथा कानिस्टेबल श्री मनोज व श्री हनुमान गौड़ इत्यादि ने दिया। सीमा सुरक्षा बल के केमल शो ने डिप्टी कमाण्डेंट श्री अमूल सिंह के नेतृत्व में प्रदर्शन कर मुख्य अतिथि व दर्शकों का मन मोहा। अखिल भारतीय स्तर पर राजस्थान पुलिस कमांडो टीम को स्वर्णिम सफलता के लिए हार्दिक बधाई।

पुलिस उप अधीक्षकों एवं आरक्षियों के पासिंग आउट की पूर्व संध्या पर प्रशिक्षुओं द्वारा अकादमी के स्टेडियम में रंगारंग प्रस्तुति दी गई। प्रशिक्षुओं द्वारा किये गये एकल एवं युगल नृत्य तथा मधुर साज के साथ युगल गीतों ने सभी का मन मोह लिया। आधुनिक नृत्य के अतिरिक्त पंजाबी भंगडा तथा माईकल जैक्सन की तर्ज पर किये गये नृत्य ने तो सभी का मन मोह लिया। अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे बैण्ड आरक्षियों द्वारा कई राजस्थानी गीत एवं धुनें प्रस्तुत की गई। इंडियन आयडल फेन बैण्ड प्रशिक्षु आरक्षी श्री कुशाल सिंह द्वारा गाये गये गाने, 'सुनो गौर से दुनिया वालो...' एवं सुश्री अन्तिम शर्मा उपनिरीक्षक द्वारा प्रस्तुत 'मेरा इश्क सूफीयाना' विशेष आकर्षक प्रस्तुतियों में से एक थी। इस अवसर पर अकादमी के निदेशक श्री भगवान लाल सोनी ने भी 'एक दिन बिक जायेगा माटी के मोल...' गाना सुनाकर सभी को अपनी गायन कौशल से रूबरू करवाकर अकादमी में हाईरार्किकल भेद मिटा दिये। उन्होंने इस अवसर पर सभी अकादमी स्टॉफ को बिना किसी

भेद भाव एवं संकोच के पूर्व की भाँति कार्य करते रहने का आह्‌वान किया। उन्होंने मजाकिया लहजे में यह भी कहा कि जो मुस्कराते हुए कार्य नहीं करेगें उन्हें नोटिस दिया जायेगा। इस अवसर पर बड़े खाने का आयोजन किया गया था, जिसमें प्रशिक्षुओं एवं स्टॉफ ने साथ–साथ बड़े खाने का आनन्द लिया।

पासिंग आउट परेड के समय हर बार अकादमी में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जाता है। सांस्कृतिक संध्या के साथ–साथ बड़े खानें का आयोजन भी किया जाता है। बड़े खाने के आयोजन के लिए विभिन्न अधिकारियों को अलग–अलग दायित्व सौंपे जाते हैं। सांस्कृतिक संध्या का आयोजन करवाने के लिए इस वर्ष डॉ. रूपा मंगलानी, व्याख्याता को जिम्मेदारी दी गई थी, जिनके सहायतार्थ सुश्री वीणा शास्त्री एवं अन्य को लगाया गया था।

# झलकियां

'मेजर्स टू इन्श्योर सेफ्टी एण्ड डिगनिटी ऑफ वूमेन एण्ड गर्ल्स' वर्कशॉप में
श्री हरीश चन्द्र मीना, महानिदेशक पुलिस एवं प्रतिभागी

श्री भूपेन्द्र सिंह पूर्व निदेशक की विदाई

बड़ा खाना एवं सांस्कृतिक संध्या

**Editorial Board**

**Editor in Chief**
Bhagwan Lal Soni, IPS, Director

**Editor**
Jagdish Poonia, RPS

**Members**
Deepak Bhargava (AD), Dr. Rameshwar Singh (AD),
Alok Srivastav (AD), Gyan Chandra (AD),
Kamal Shekhawat (AD)


Photographs By Sagar


**Rajasthan Police Academy**

Nehru Nagar, Jaipur (Rajasthan) India

Ph.: +91-141-2302131, 2303222, Fax : 0141-2301878

E-mail : policeresearchrpa@yahoo.com Web : www.rpa.rajasthan.gov.in

Printed at : Shiva Offset, Jaipur # 0141-2365721